(15/05/2020)

Educational Psychology

Paper III

B.A. II (Hons.)

Whom do you consider physically handicapped child? What measures would you suggest for physically handicapped children?

शारीरिक विकलांग बालक से आप क्या समझते हैं? शारीरिक विकलांग बालकों की शिक्षा के लिए आप किन उपायों का सुझाव देंगे?

प्रत्येक school में विभिन्न प्रकार के students education ग्रहण करने के लिए जाते हैं। जो शारीरिक एवं स्वास्थय के दृष्टिकोण से अलग-अलग होते हैं। सभी प्रकार के बालकों को स्कूल में समायोजन करने के लिए विशेष प्रयास करना होता है। बुद्धि के दृष्टिकोण से कुछ बालक मन्दबुद्धि के होते हैं, कुछ सामान्य बुद्धि के तथा कुछ तीव्र बुद्धि के। विकलांग वैसे बालकों को कहते हैं जी शारीरिक विकृति से ग्रस्त रहते हैं। ऐसे बालकों में ज्ञानात्मक, क्रियातत्मक या अन्य दोष पाए जाते हैं।

Crow and Crow ने कहा है- "ऐसे व्यक्ति जिन्हें ऐसा शारीरिक दोष होता है जो किसी भी रूप में उसे साधारण क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है या उसे सीमित रखता है, ऐसे व्यक्ति को हम विकलांग व्यक्ति कह सकते है।"

विकलांग बालक को शिक्षित करना भी समाज का दायित्व है जिससे की वे अपना जीवकोपार्जन कर सके तथा समाज में मर्यादा के साथ जी सके। क्यूंकि ऐसे बालक भी अन्य बालकों के सामान ही होते हैं, सिर्फ उनमें शारीरिक दोष के चलते कुछ कमी आ जाती है।

विकलांग बालकों की समस्या- विकलांग व्यक्ति के लिए समायोजन एक बहुत बड़ी समस्या है। उसे अभियोजन के लिए अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना है। इसका कारण उसकी शारीरिक कुर्रोपता, बेढंगापन, आदि है। विकलांग बालक इच्छित क्रियाओं में भाग लेने के योग्य नहीं होता, अतः उसे संतोषजनक दूसरी रुचियों की आवश्यकता होती है। ऐसे व्यक्ति में हीनता की भावना विकसित हो जाती है। हीनता की भावना भी उसे समाज में अभियोजन में बाधक होती है। अधिकाँश स्थिति में ऐसे बच्चे साधारण या उच्च बुद्धि के होते हैं। विकलांग बालकों के शारीरिक दोष को अलग रख कर देखा जाए, तो वह भी सामान्य बालकों की तरह होता है, अतः ऐसे बालकों को उन सभी शैक्षिक सामग्रियों की सुविधा देनी चाहिए जो एक सामान्य बालक को दिया जाता है, किन्तु उसके शारीरिक दोषों को भी ध्यान में रखना चाहिए। केवल उन व्यक्तिओं को छोड़ कर जो इस प्रकार के गंभीर शारीरिक दोष रखते हैं जिससे उसके काम में बाधा हो सकती है बाकी सभी को उचित व्यवसाय की शिक्षा दी जाए। जो बालक गंभीर रूप से दोष मुक्त हैं, उनके लिए इस प्रकार की शिक्षा का प्रबंध किया जाना चाहिए जो उन दोषों के रहते हुए भी ग्रहण कर सके। शिक्षा के द्वारा विकलांगों को सामाजिक समायोजन में सहायता मिलती है। ऐसे बच्चों में प्रेरणा जागृत करनी चाहिए ताकि स्वयं शिक्षा ग्रहण करने के लिए अग्रसर हो तथा वह पूर्ण शक्ति सीमा के अनुसार काम कर सके और उसका ध्यान शारीरिक विकलांगता से विचलित हो जाये तथा वह अपने को समझे की वह समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है।

शारीरिक विकलांग बालको की शिक्षा-

1) अपंग बालक-

साधारण दशाओं में शारीरिक अभ्यास न कर पाने वाले बालक, जो कुछ दोषों से पीड़ित रहते हैं उन्हें अपंग बालक कहते हैं। ऐसे व्यक्ति दुघटनाओं के कारण, किसी बिमारी के कारण या अन्य कारणों से अपंग हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों में हीनता की भावना बहुत अधिक होती है। इनकी शिक्षा

के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। अपंग बालकों की शिक्षा के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

i) अपंग बच्चों की बुद्धि सामान्य बच्चों की तरह होती है। अतः शिक्षा के द्वारा विकास का पूर्ण अवसर देना चाहिए।
ii) शिक्षा के माध्यम से अपंग बालकों में ऐसी भावना उत्पन्न करनी चाहिए जिससे वे अपनी हीनता की भावना पर काबू पा सकें तथा समुचित व्यवहार का विकास कर सकें।
iii) अपंग बालकों के लिए उसके शरीर के अनुसार कुर्सी तथा बेंच होना चाहिए जिसपर वे आराम से बैठ कर शिक्षा ग्रहण कर सकें।
iv) अपंग बालकों को व्यावसायिक शिक्षा देनी चाहिए ताकि वह अपने शरीर और योग्यता के अनुसार कार्य कर सकें।

2) <u>अंधा बालक-</u>

जिन बालकों में देखने की क्षमता नहीं रहती है उसे अंधा बालक कहते हैं। अधिकाँश अंधा बालक जन्मजात होते हैं। ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं-

(i) **<u>ब्रैल पद्धति-</u>** अंधों को पढ़ने के लिए इस पद्धति का आविष्कार Louis Braille ने 1855 में किया था। इस पद्धति में ब्रैल पुस्तक द्वारा पढ़ना सिखाया जाता हैं। ब्रैल अक्षर एक ख़ास प्रकार के प्लेट पर विभिन्न आकार के बिंदु के रूप में उठे होते हैं इस लिए अंधा व्यक्ति उँगलियों के स्पर्श द्वारा उन अक्षरों को पढ़ लेता हैं। अंधों को पढ़ने के लिए इस पद्धति का व्यापक प्रयोग किया जाता हैं।

(ii) **विद्युत पद्धति**- इसमें एक विद्युत पेंसिल होती है जिसकी सहायता से अंधी छात्र ब्रैल पुस्तकों को पढ़ते हैं। पेंसिल को नुखीली रेखाओं पर घुमाने से कुछ आवाज़ उत्पन्न होती हैं जो earphone में माध्यम से कान तक पहुँचता हैं। इसके माध्यम से भी अंधे बालकों की शिक्षा में विशेष सहयोग मिलता हैं।

(iii) **<u>विशिष्ट पाठ्यक्रम-</u>** अंधे बालकों में संगीत सम्बन्धी योग्यता अधिक होती हैं, अतः ऐसे बालकों को संगीत सीखने का भी भरपूर अवसर देना चाहिए। इसके बाद क्रियात्मक परिक्षण, बोलने-सम्बन्धी प्रशिक्षण और व्यावसायिक प्रशिक्षण देना चाहिए।

(iv) **<u>विशिष्ट प्रकार के स्कूल</u>**- अंधे बालकों की शिक्षा के लिए अलग से स्कूल की स्थापना की जानी चाहिए, जहां रह कर पढ़ने की व्यवस्था हो। जब वे पढ़ना लिखना सीख जाएं, तो उन्हें सामान्य स्कूलों में भेजा जा सकता हैं ताकि वे आँख वाले बच्चों के साथ अपना अभियोजन कर सकें। वहाँ उनके लिए reader और writer दिया जाना चाहिए जिससे पढ़ने लिखने में मदद हो सके।

3) <u>आंशिक रूप से अंधे बालकों की शिक्षा-</u>

आंशिक रूप से अंधा बालक कुछ देखने में सक्षम रहता हैं, अतः इसके लिए अलग शिक्षा की व्यवस्था होती चाहिए। उसके समायोजन के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं-

(i) जो बालक आंशिक रूप से अंधे हैं उन्हें बड़े अक्षरों वाली पुस्तकें पढ़ने के लिए दी जानी चाहिए।

(ii) विद्यालय में रौशनी की पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिए।

(iii) ब्लैकबोर्ड पूरी तरह से साफ़ रखना चाहिए तथा कक्षा में उसे उचित दूरी पर बैठाना चाहिए।

(iv) आँख के डॉक्टर से जँचवाकर lens लगा चश्मा का प्रबंध होना चाहिए जिसे की वे साफ़ देख सकें।

4) <u>पूर्ण या आंशिक रूप से बेहरे बालक-</u>

कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो अपनी श्रवण शक्ति खो देते हैं। उसकी शिक्षा की व्यवस्था करना भी समाज का दायित्व हैं। ऐसे बच्चों की शिक्षा सामान्य बच्चों के साथ नहीं दी जा सकती हैं। यदि बच्चा जन्म से ही बहरा हैं, तो वह निश्चित रूप से गूंगा भी होगा लेकिन बाद में चल कर बहरा हुआ हैं तो वह निश्चित रूप से गूंगा नहीं होगा। ऐसे बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था निम्नलिखित प्रकार से दी जा सकती हैं-

(i) विद्यालय में कुछ इस प्रकार के साधनों का विकास करना चाहिए जिससे बेहरे बालकों तथा शिक्षकों में सम्बन्ध स्थापित हो सके।

(ii) जो बालन अपूर्ण बहरा हैं उसे साधारण बालकों के साथ शिक्षा दी जा सकती हैं, वर्ग में आगे बैठना चाहिए, जिससे की वह शिक्षक के भावों तथा अभिव्यक्तिओं को भी देख सके।

(iii) बेहरे बालकों में कुछ दुसरे गुण हो सकते हैं जिन्हें पहचान कर उसे विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

(iv) बेहरे बालकों को सामान्य बालकों के साथ शिक्षा दी जाती हैं, इस लिए उनमें हीनता की भावता उत्पन्न होने की संभावना रहती हैं, जो शिक्षा प्राप्त करने में बाधक होता हैं। अतः इससे बचाने का प्रयाद किया जाना चाहिए।

(v) बेहरे छात्र को earphone दिया जाना चाहिए जिससे वह शिक्षकों की बातों को आसानी से सुन सके।

(vi) ऐसे बालकों में क्रियात्मक योग्यता अधिक होती हैं, अतः ऐसे बालकों को क्रियात्मक शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वह जीविकोपार्जन कर सके।

5) <u>गूंगे तथा हकलाने वाले बालक-</u>

कुछ बालक जन्म से ही बेहरे तथा गूंगे होते हैं। इसके अलावा तोतलाना, हलकान, धीरे-धीरे बोलना, नाक दबा कर बोलना, मोटी आवाज़, कर्कश आवाज़ दोषपूर्ण वाणी के लक्षण हैं। ऐसे बच्चे कुछ मनोवैज्ञानिक कारणों से भी हकलाने वाले हो जाते हैं। अभिभावक की लापरवाही के कारण त्रुटिपूर्ण बोलने की आदत बच्चों में विकसित हो जाती हैं। यह अनुकरण के कारण भी होता हैं तथा संवेगात्मक कठिनाइयों के कारण भी हकलाते हैं। इस कमी को दूर करने के निम्नलिखित उपाय हैं-

(i) शारीरिक दोषों को ऑपरेशन के माध्यम से ठीक किया जा सकता हैं।

(ii) शिक्षकों को ऐसे छात्रों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

(iii) घर तथा स्कूल के वातावरण को ठीक रखने से उसके समायोजन में सहायता दी जा सकती हैं। ऐसे बालकों के माता पिता को चाहिए की ऐसा प्रयत्न करे जिससे बालकों की रुचियों, क्षमताओं, आवश्यकताओं, आदि को पहचाना जा सके और उसी के अनुरूप उसे शिक्षित किया जा सके।

(iv) बच्चे को अच्छे ढंग से बोलने का अनुकरण करना चाहिए।

(v) भोजन की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

इस प्रकार स्पष्ट हैं की शारीरिक विकलांग बालकों में भी अनेक क्षमताएं होती हैं। सिर्फ उसे पहचान कर उचित ढंग से शिक्षित करने की आवश्यकता हैं। यदि उसे उचित ढंग से शिक्षित किया जाता हैं, तो वह भी सामान्य व्यक्तियों की तरह अपना जीविकोपार्जन कर सकता हैं तथा समाज में उचित प्रतिष्ठा के साथ जी सकता हैं।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com